Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 3

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग

आरंभिक समाज (600 ई.पू.-600 ई.)

भाग - 8

प्रीतेश जोशी

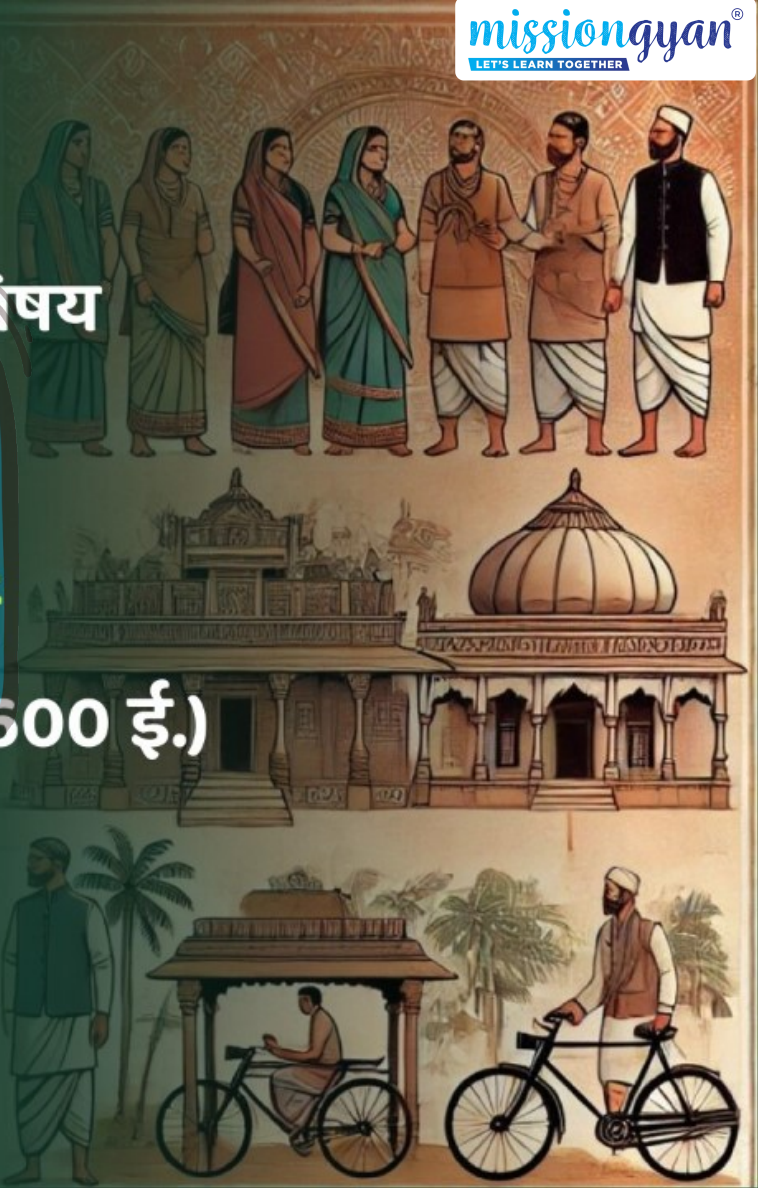

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

स्रोत

द्रोपदी का विवाह

पांचाल नरेश द्रुपद ने एक स्वयंवर का आयोजन किया जिसमें यह शर्त रखी गई कि धनुष की चाप चढ़ा कर निशाने पर तीर मारा जाये, विजेता उनकी पुत्री द्रोपदी से विवाह करने के लिए चुना जायेगा। अर्जुन ने यह प्रतियोगिता जीती और द्रोपदी ने उसे वरमाला पहनाई। पांडव उसे लेकर अपनी माता कुंती के पास गए जिन्होंने बिना देखे ही उन्हें लाई गई वस्तु को आपस में बाँट लेने को कहा। जब कुंती ने द्रोपदी को देखा तो उन्हें अपनी भूल का अहसास हुआ, किंतु उनकी आज्ञा की अवहेलना नहीं की जा सकती थी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

बहुत सोच-विचार के बाद युधिष्ठिर ने यह निर्णय लिया कि द्रोपदी उन पाँचों की पत्नी होगी।

जब द्रुपद को यह बताया गया तो उन्होंने इसका विरोध किया। किंतु ऋषि व्यास ने उन्हें इस तथ्य से अवगत कराया कि पांडव वास्तव में इंद्र के अवतार थे और उनकी पत्नी ने ही द्रोपदी के रूप में जन्म लिया था। अत: नियति ने ही उन सबका साथ निश्चित कर दिया था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

बहुपति विवाह

महाभारत

द्रौपदी → 5 पति

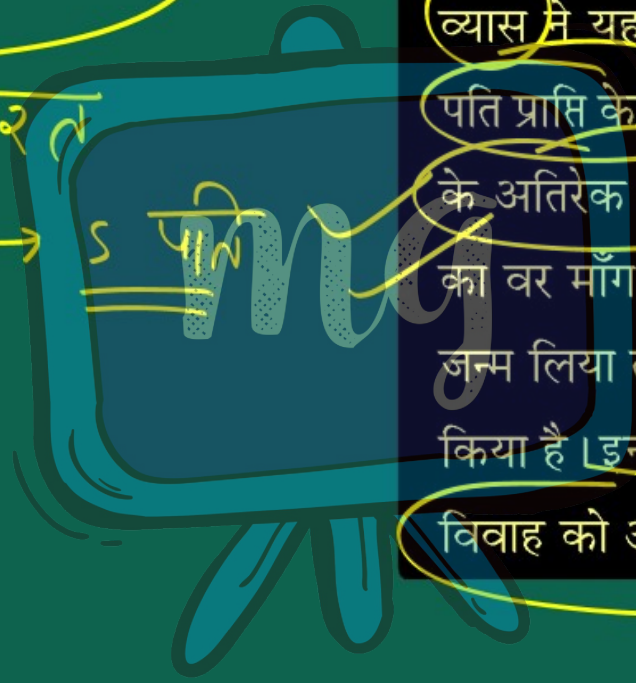

व्यास ने यह भी बताया कि एक बार युवा स्त्री ने पति प्राप्ति के लिए शिव की अराधना की और उत्साह के अतिरेक में एक के बजाय पाँच बार पति प्राप्ति का वर माँग लिया। इसी स्त्री ने द्रोपदी के रूप में जन्म लिया तथा शिव ने उसकी प्रार्थना को परिपूर्ण किया है। इन कहानियों से संतुष्ट होकर द्रुपद ने इस विवाह को अपनी सहमति प्रदान की।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

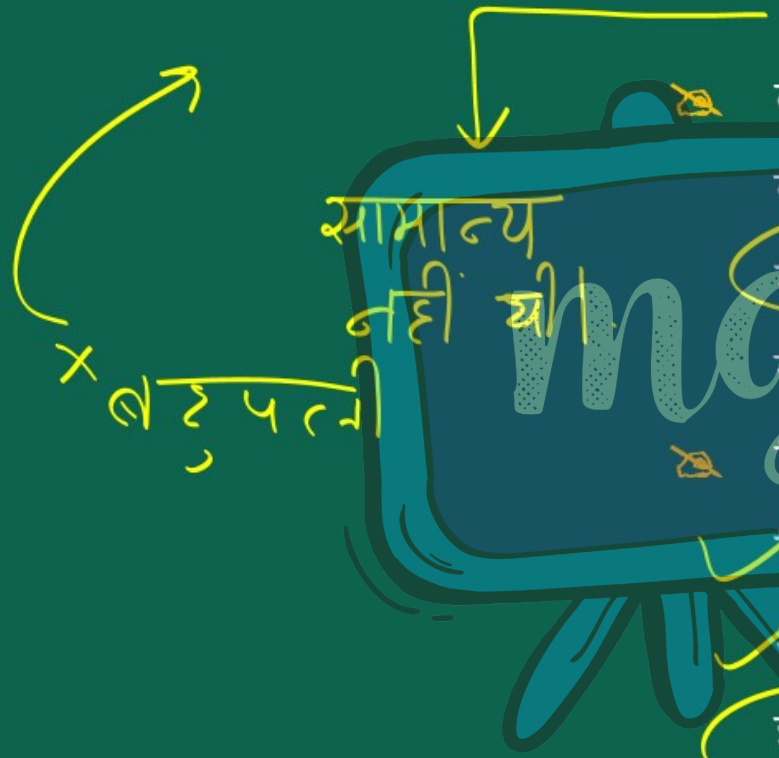

- लेखक द्वारा बहुपति विवाह संबंध का चित्रण इस बात की ओर इंगित करता है कि संभवतः यह प्रथा शासकों के विशिष्ट वर्ग में किसी काल में मौजूद रही होगी।
- विभिन्न स्पष्टीकरण इस बात को भी व्यक्त करता है कि बहुपति प्रथा समय के साथ उन ब्राह्मणों में अमान्य हो गई जिन्होंने कई शताब्दियों के दौरान इस ग्रंथ को पुननिर्मित किया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



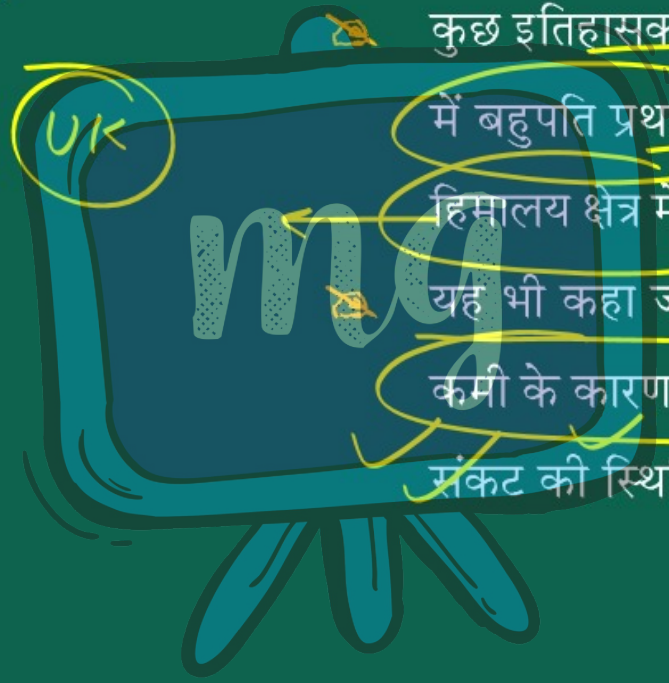

कुछ इतिहासकारों की राय है कि ब्राह्मणों की नजरों में बहुपति प्रथा अमान्य और अवांछित थी तथा यह हिमालय क्षेत्र में प्रचलन में भी। (और आज भी है)। यह भी कहा जाता है कि युद्ध के समय स्त्रियों की कमी के कारण बहुपति प्रथा को अपनाया गया यानि संकट की स्थिति में इसे अपनाया गया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

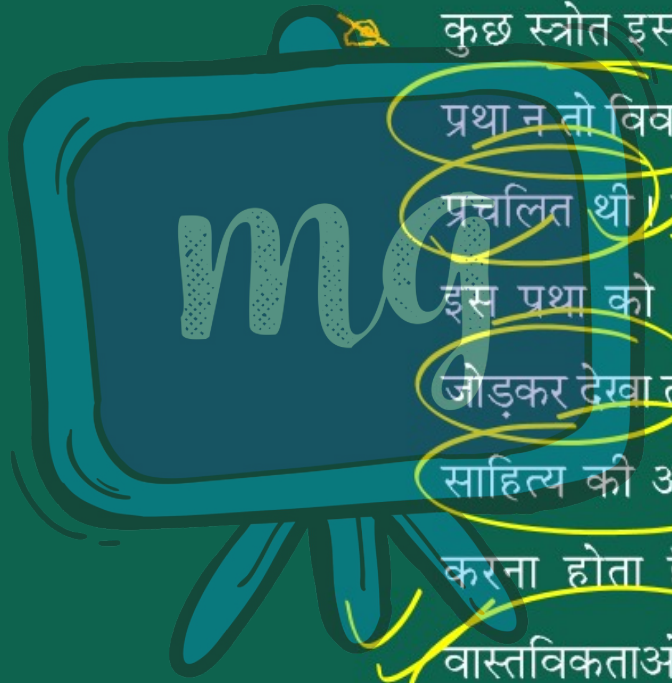

कुछ स्त्रोत इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि बहुपति प्रथा न तो विवाह पद्धति थी और ना ही यह अधिक प्रचलित थी। फिर क्यों इस ग्रंथ के रचनाकार ने इस प्रथा को महाभारत के प्रमुख पात्रों के साथ जोड़कर देखा तो शायद हो सकता है कि सृजनात्मक साहित्य की अपनी कथा संबंधी जरूरतों को पूरा करना होता है जो हमेशा समाज की मौजूदा वास्तविकताओं को नहीं दर्शाती।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

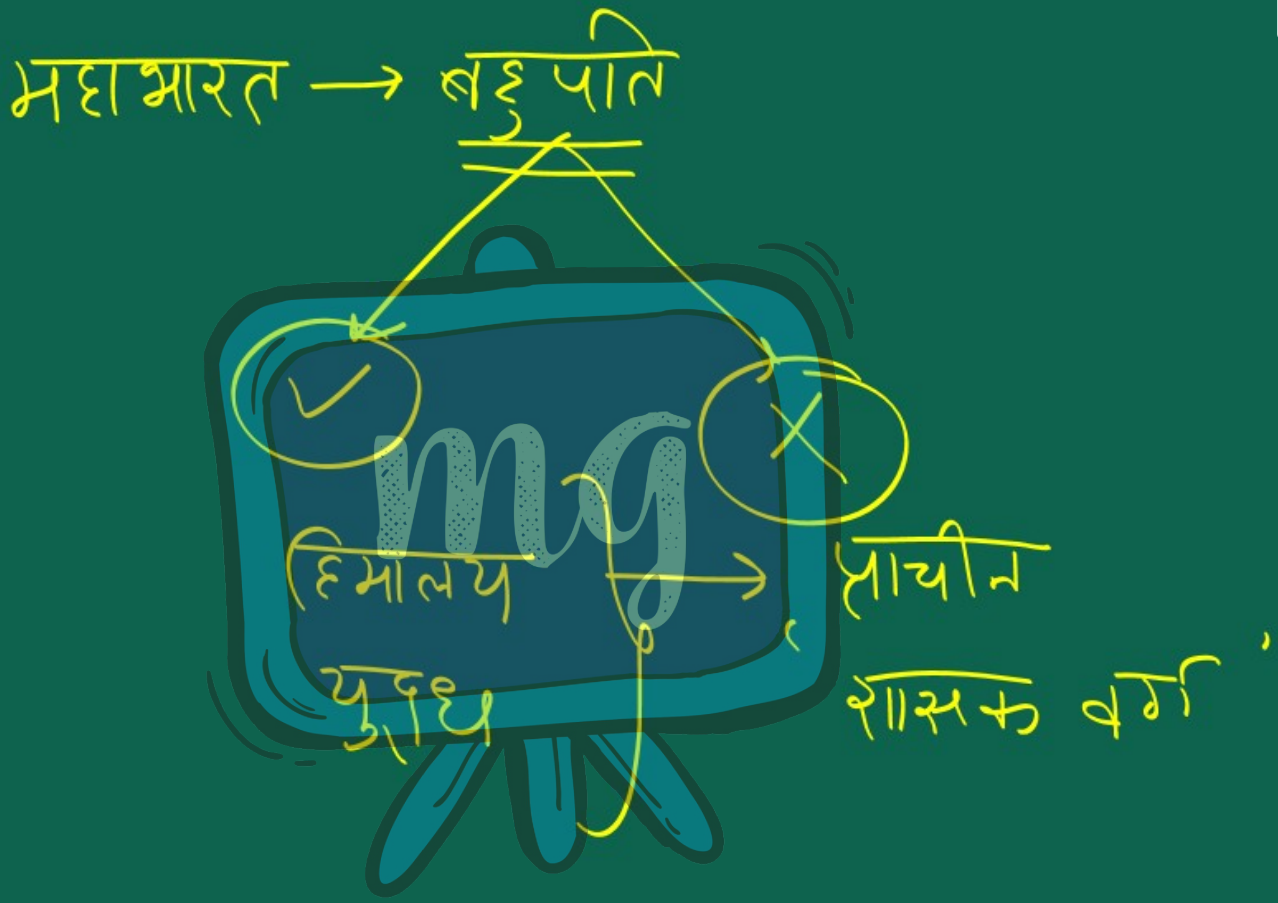

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. बहुपति विवाह प्राचीन काल में कितने प्रचलित थे?



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

समय → परिवर्तित

↓

संविधान

एक गतिशील ग्रंथ

- शताब्दियों से महाभारत के अनेक पाठान्तर भिन्न-भिन्न भाषाओं में होते रहे।
- इसके साथ ही अनेक कहानियां जिनका उद्भव एक क्षेत्र विशेष में हुआ और जिनका खास लोगों के बीच प्रसार हुआ, वे सब इस महाकाव्य में समाहित कर ली गई।
- साथ ही इसकी मुख्य कथा की अनेक पुनर्व्याख्याऐं की गईं।
- इसके प्रसंगों को मूर्तिकला और चित्रों में भी दर्शाया गया।
- इस महाकाव्य ने नाटकों और नृत्य कलाओं के लिए भी विषय वस्तु प्रदान की।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

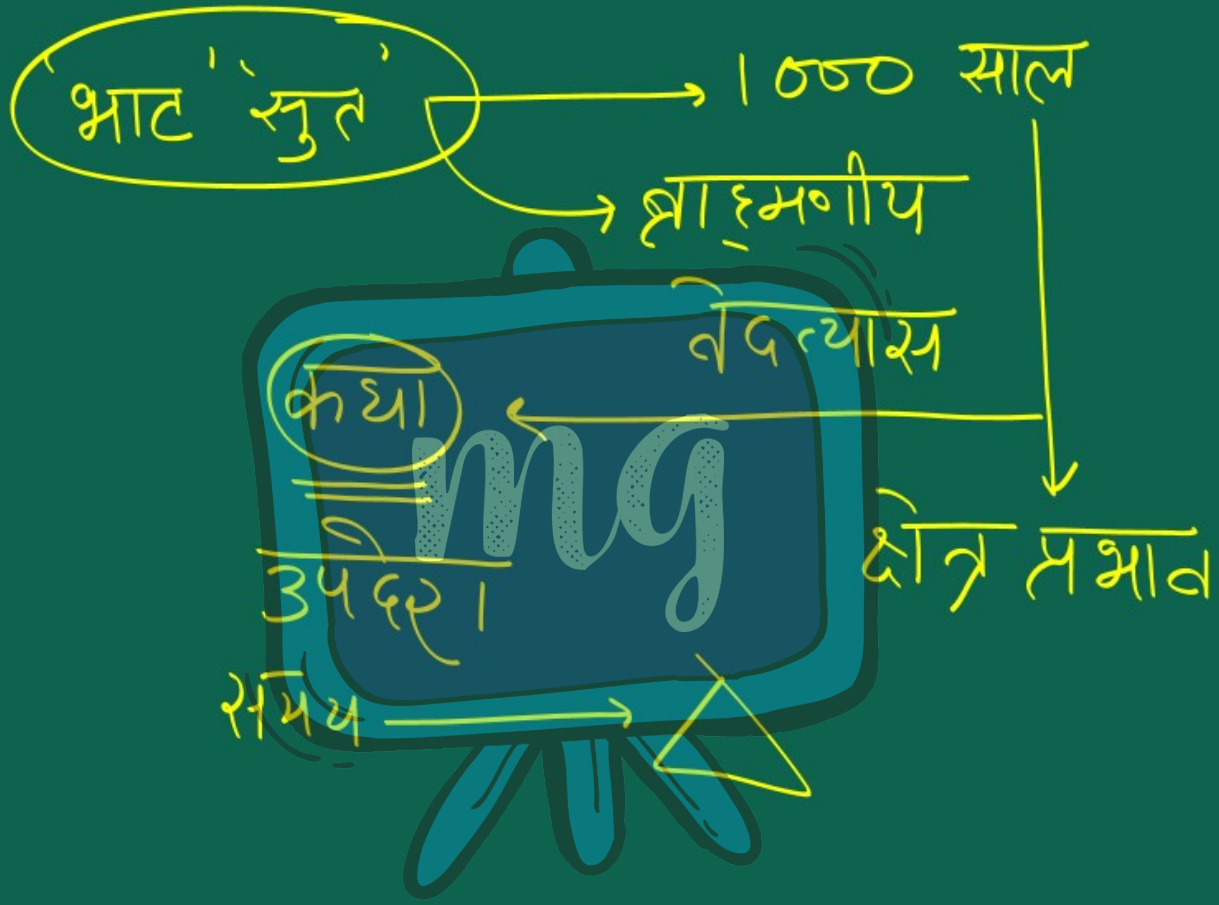

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

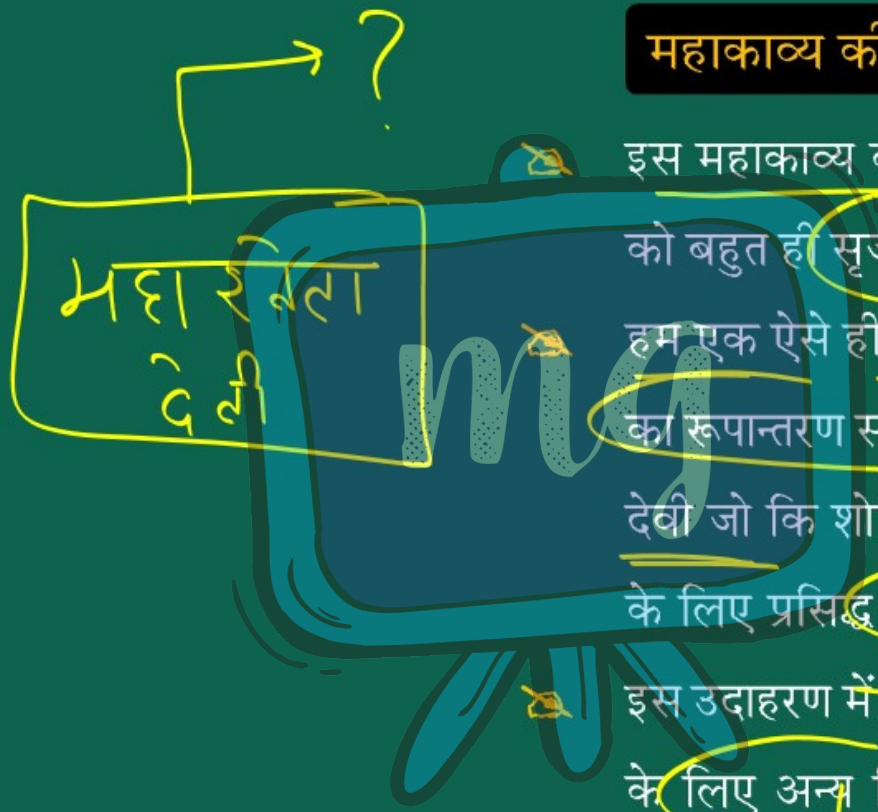

महाकाव्य की पुनर्व्याख्या का एक अंश

इस महाकाव्य की पुनर्व्याख्याओं में मुख्य कथावस्तु को बहुत ही सृजनात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। हम एक ऐसे ही उदाहरण में महाभारत के एक प्रसंग का रूपान्तरण समसामयिक बांग्ला लेखिका महाश्वेता देवी जो कि शोषण के विरूद्ध अपनी आवाज उठाने के लिए प्रसिद्ध हैं के द्वारा देखते हैं।

इस उदाहरण में उन्होंने महाभारत की मुख्य कथावस्तु के लिए अन्य विकल्प खोजे हैं और उन प्रश्नों की ओर ध्यान खींचा है जिस पर संस्कृत पाठ पूर्णतया मूक है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

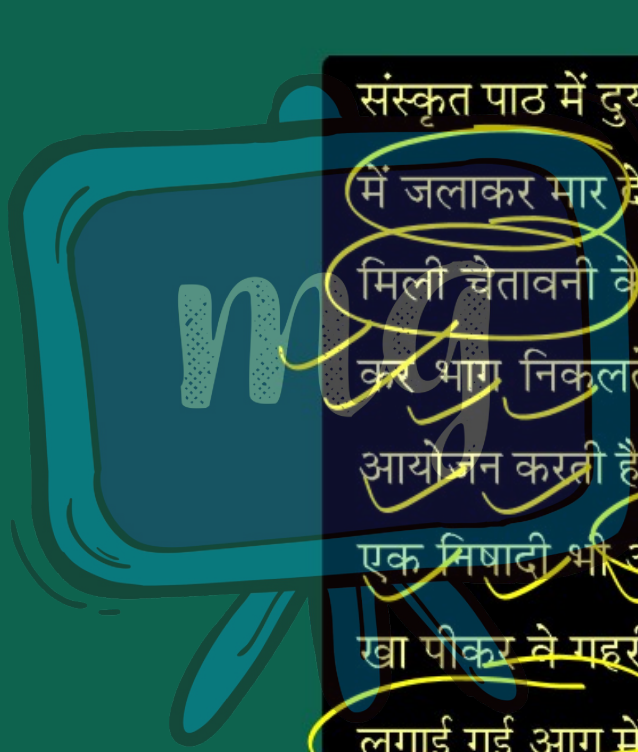

संस्कृत पाठ में दुर्योधन द्वारा पांडवों को छल से लाक्षागृह में जलाकर मार देने का उल्लेख आता है। किन्तु पहले से मिली चेतावनी के कारण पांडव उस गृह में सुरंग खोद कर भाग निकलते हैं। उस समय कुंती एक भोज का आयोजन करती है जिसमें ब्राह्मण आमंत्रित होते हैं किन्तु एक निषादी भी अपने 5 पुत्रों के साथ उसमें आती है। खा पीकर वे गहरी नींद में सो जाते हैं और पांडवों द्वारा लगाई गई आग में वे उसी लाक्षागृह में भस्म हो जाते हैं। जब उस निषादी और उसके पुत्रों के जले शव मिलते हैं तो लोग यह सोचते हैं कि पांडवों की मृत्यु हो गई है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

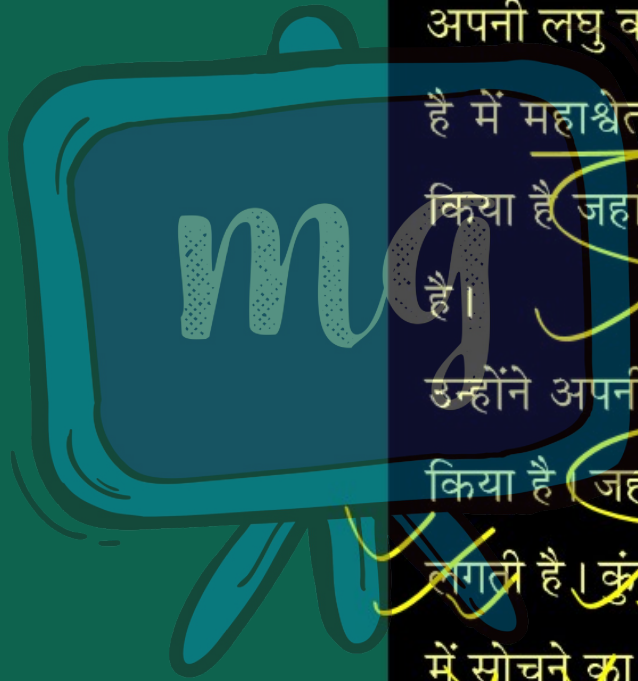

अपनी लघु कथा जिसका शीर्षक 'कुंती ओ निषादी' है में महाश्वेता देवी ने कथानक का प्रारम्भ वहां से किया है जहां महाभारत के इस प्रसंग का अंत होता है।

उन्होंने अपनी कहानी का संयोजन एक वनप्रांतर में किया है। जहां महाभारत के युद्ध के बाद कुंती रहने लगती है। कुंती के पास अब अपने अतीत के विषय में सोचने का समय है। पृथ्वी जो प्रकृति के प्रतीक है उससे बातें करते हुए वह अपनी त्रुटियों को अंगीकार करती है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



प्रतिदिन वह निषादों को देखती है जो वन में लकड़ी, शहद, कंदमूल आदि एकत्रित करने आते हैं। उनमें एक निषादी बहुदा कुंती को पृथ्वी से बात करते हुए सुनती है।

एक दिन वातावरण में कुछ था : जानवर जंगल छोड़कर भाग रहे थे। कुंती ने देखा कि निषादी उसे ताक रही है और फिर निषादी ने कुंती से पूछा कि क्या उन्हें लाक्षागृह की याद हे तो कुंती सकपका गई। उन्हें याद था। क्या उन्हें एक वृद्धा निषादी और उसके पांच पुत्र याद थे?

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

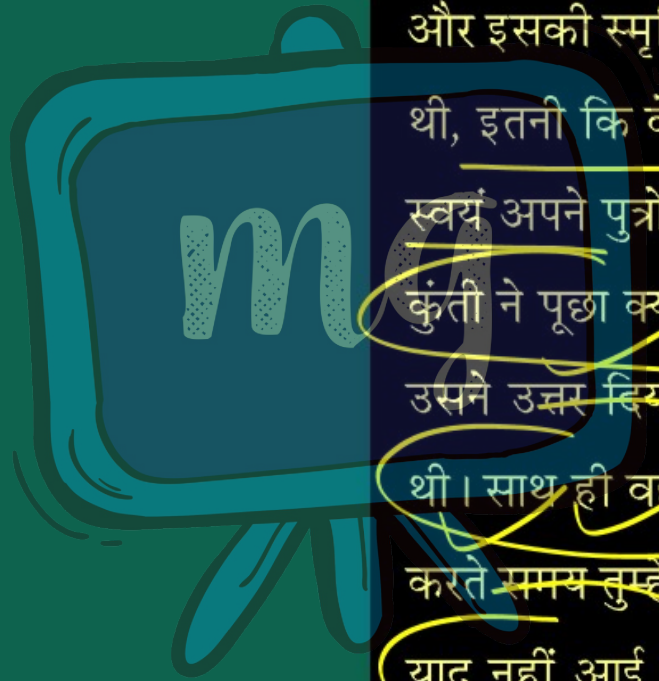

और इसकी स्मृति थी कि कुंती ने उन्हें मदिरा पिलाई थी, इतनी कि वे सब बेसुध हो गये थे। जबकि वह स्वयं अपने पुत्रों के संग बचकर निकल गई थी।

कुंती ने पूछा क्या तुम वह निषादी हो?

उसने उत्तर दिया कि मरी हुई निषादी उसकी सास थी। साथ ही वह बोली कि अपने अतीत पर विचार करते समय तुम्हें एक बार भी उन 6 निर्दोष लोगों की याद नहीं आई जिन्हें प्राणों से हाथ धोना पड़ा था, क्योंकि तुम अपनी और अपने पुत्रों की जान बचाना चाहती थी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



जिस समय वे दोनों बातें कर रही थीं आग की लपटें करीब आ रही थीं। निषादी तो अपने प्राण बचाकर निकल गई किन्तु कुंती जहां खड़ी थी वहीं रह गई।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

गतिशील → परिवर्तन

उदाहरण → कृति ओ निषादी

↓

महाश्वेतादेवी



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. क्या महाभारत एक गतिशील ग्रंथ ?



हाँ → क्यों

- क्षेत्र
- लेखक
- भाषा
- कथा
- उपदेश
- अन्य साक्ष्य

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

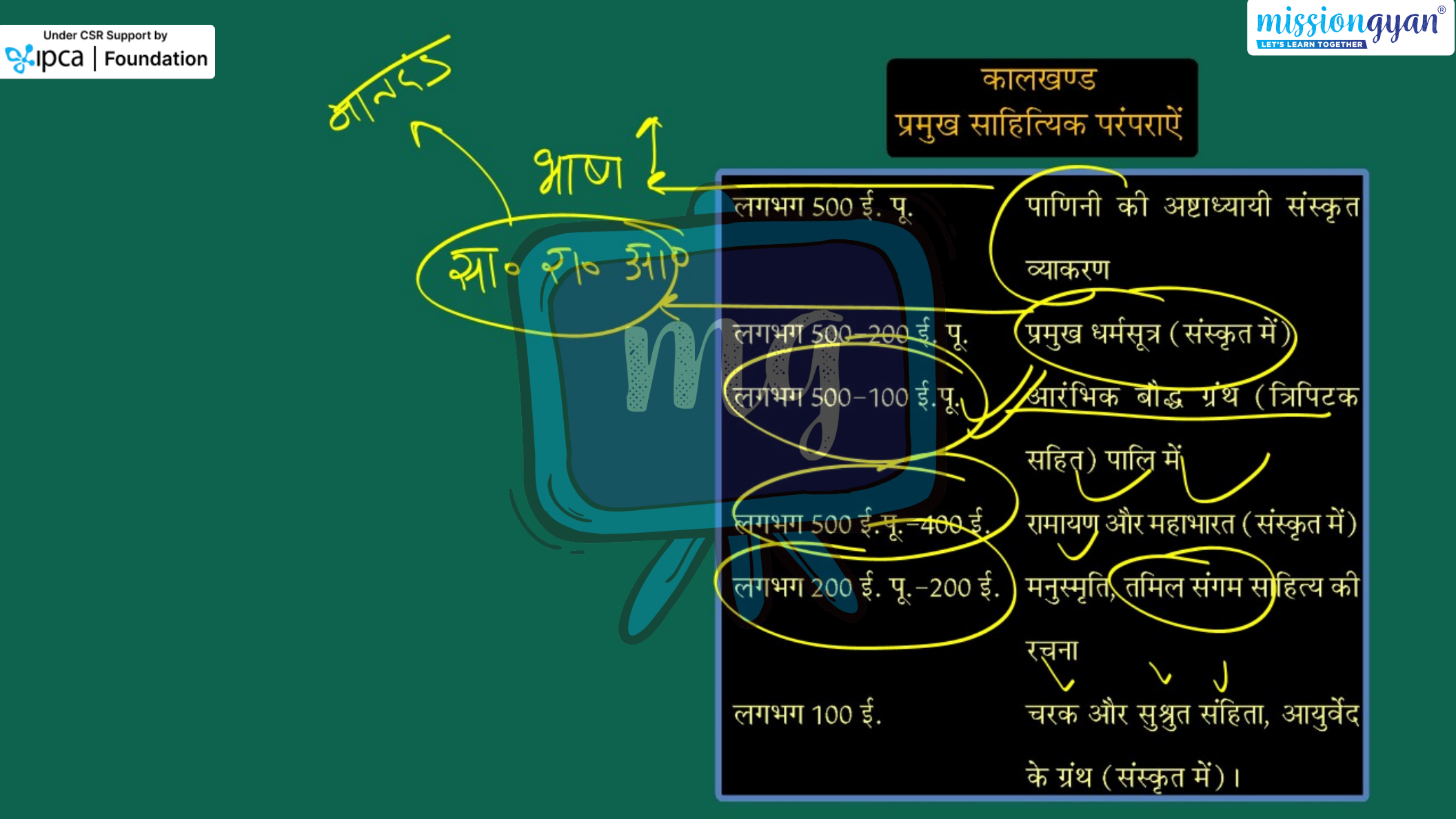

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

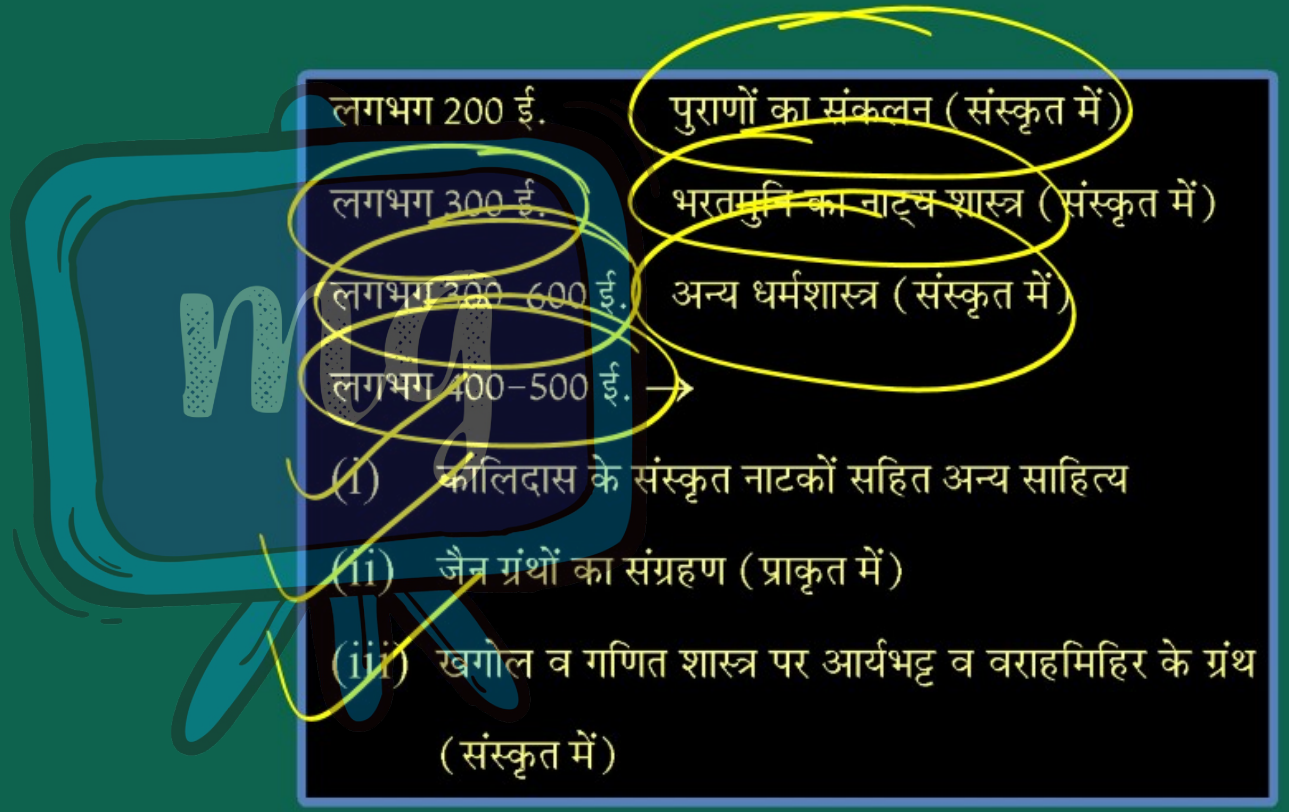

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

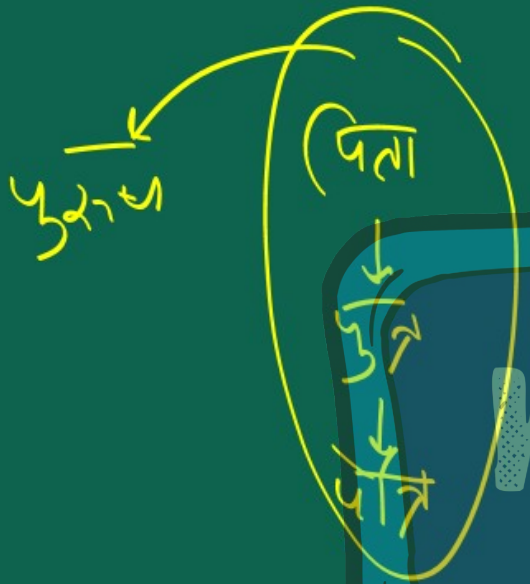

शासक / उच्च

1. स्पष्ट कीजिए कि विशिष्ट परिवारों में पितृवंशिकता क्यों महत्वपूर्ण रही होगी ?

उत्तर :

- विशिष्ट परिवारों में शासक, धनी लोग तथा ब्राह्मणों के परिवार आते थे।
- पितृवंशिकता वह वंश-परम्परा थी जो पिता के पुत्र और फिर पौत्र, प्रपौत्र आदि से चलती थी।
- प्राचीन काल में विशिष्ट परिवारों में पितृवंशिकता महत्वपूर्ण रही थी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

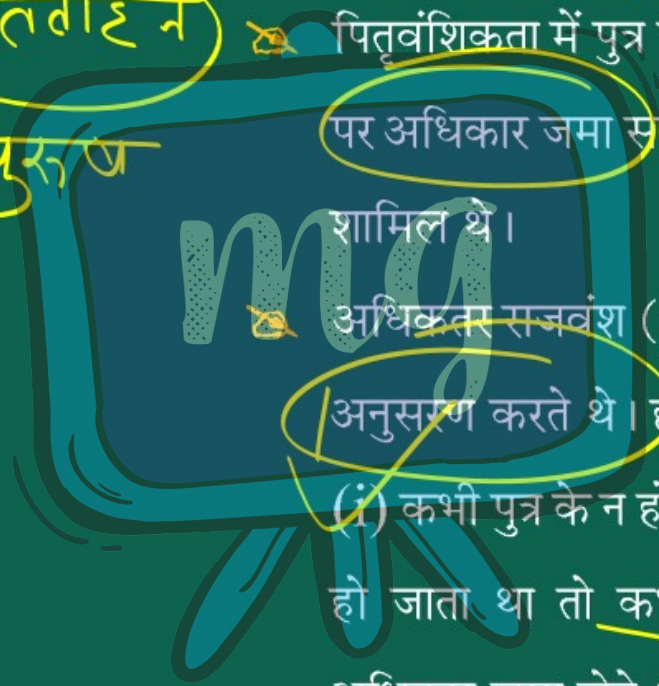

- पितृवंशिकता में पुत्र पिता की मृत्यु के बाद उसके संशाधनों पर अधिकार जमा सकते थे। इनमें राजाओं के सिंहासन भी शामिल थे।
- अधिकतर राजवंश (600 ई.पू.) पितृवंशिकता प्रणाली का अनुसरण करते थे। हालांकि इस प्रथा में विभिन्नता थी।

(i) कभी पुत्र के न होने पर एक भाई दूसरे का उत्तराधिकारी हो जाता था तो कभी बंधु-बांधव सिंहासन पर अपना अधिकार जमा लेते थे।

(ii) कुछ विशेष परिस्थितियों में स्त्रियां जैसे प्रभावती गुप्त सत्ता का उपभोग करती थीं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

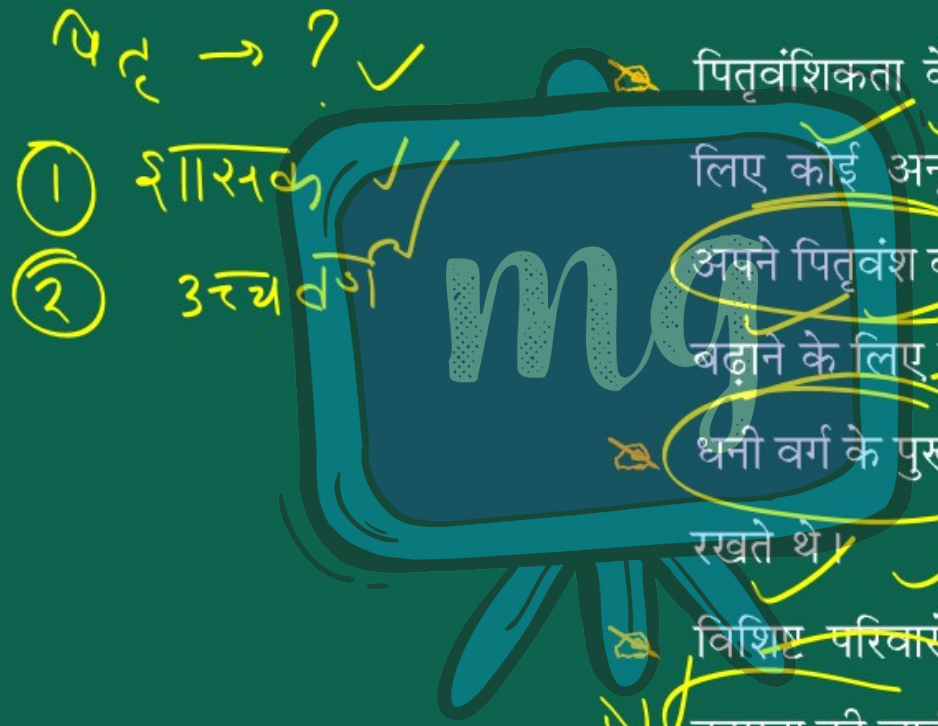

- पितृवंशिकता के प्रति झुकाव शासक परिवारों के लिए कोई अनूठी बात नहीं थी। इसके द्वारा वे अपने पितृवंश को आगे बढ़ाते थे। पितृवंश को आगे बढ़ाने के लिए पुत्र महत्वपूर्ण होते थे पुत्रियां नहीं।
- धनी वर्ग के पुरुष एवं ब्राह्मण भी ऐसा ही दृष्टिकोण रखते थे।
- विशिष्ट परिवारों में उत्तम पुत्रों की प्राप्ति की भी कामना की जाती थी जो ऋग्वेद के एक मंत्र द्वारा भी स्पष्ट होती है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

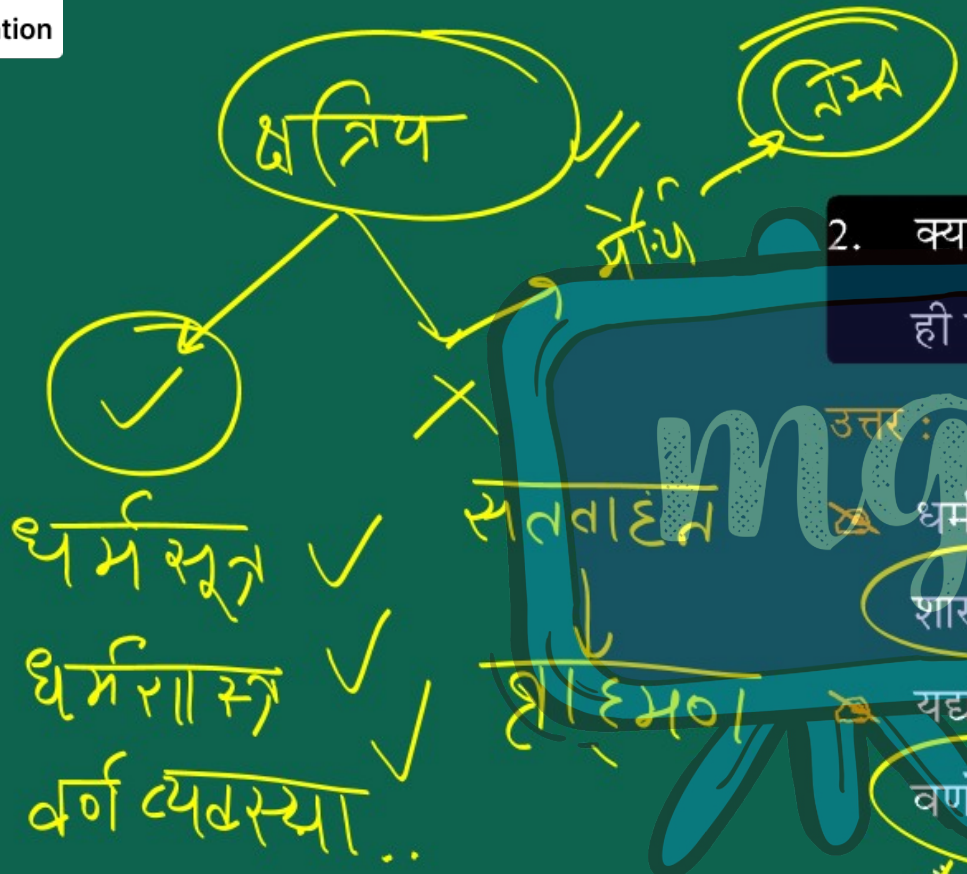

2. क्या आरंभिक राज्यों में शासक निश्चित रूप से क्षत्रिय ही होते थे ? चर्चा कीजिए।

उत्तर :

धर्मसूत्र एवं धर्मशास्त्रों के अनुसार केवल क्षत्रिय ही शासक हो सकते थे।

यद्यपि अनेक महत्वपूर्ण राजवंशों की उत्पत्ति अन्य वर्णों से हुई।

मौर्य वंश :- मौर्य वंश के उद्भव पर गर्मजोशी से बहस होती है। बौद्ध ग्रंथ उन्हें क्षत्रिय बताते हैं, जबकि ब्राह्मणीय शास्त्र उन्हें निम्न कुल का मानते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

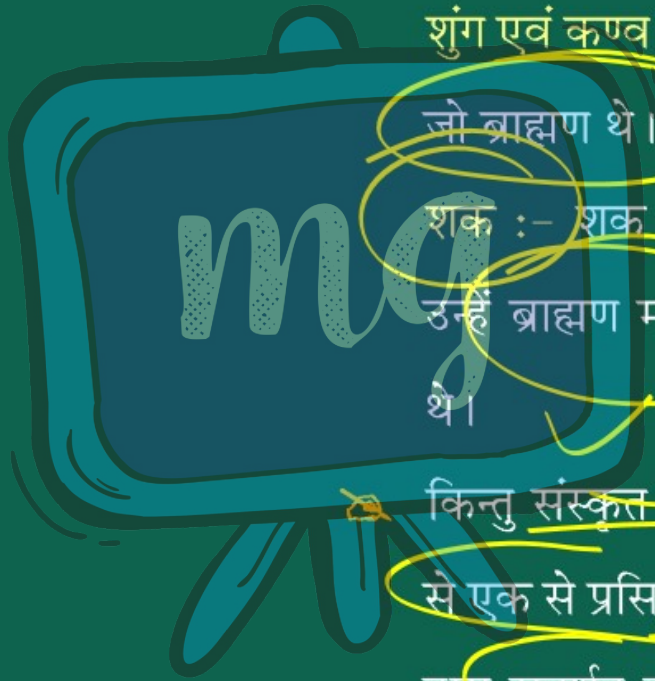

शुंग एवं कण्व वंश :- वे मौर्यों के बाद सत्ता में आये जो ब्राह्मण थे।

शक :- शक जो मध्य एशिया से भारत आये हैं। उन्हें ब्राह्मण मलेच्छ, बर्बर तथा अन्यदेशीय मानते थे।

किन्तु संस्कृत के संभवतः आरंभिक अभिलेखों में से एक से प्रसिद्ध शक शासक रूद्रदामन (200 ई.) द्वारा सुदर्शन झील के जीर्णोद्धार का वर्णन मिलता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

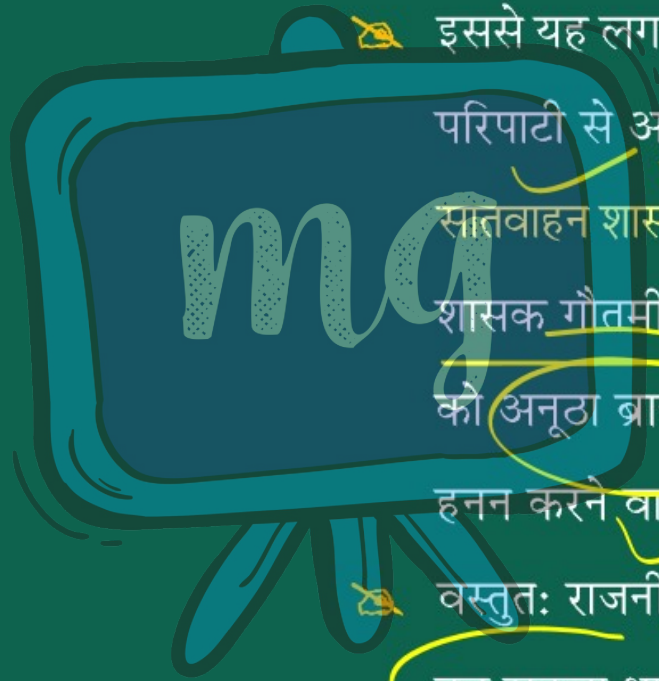

- इससे यह लगता है कि शक्तिशाली मलेच्छ संस्कृतीय परिपाटी से अवगत थे।
- सातवाहन शासक :- सातवाहन कुल के सबसे प्रसिद्ध शासक गौतमी - पुत - सिरी - सातकानि ने स्वयं को अनूठा ब्राह्मण और साथ ही क्षत्रियों के दर्प का हनन करने वाला बताया था।
- वस्तुतः राजनीतिक सत्ता का उपभोग हर वह व्यक्ति कर सकता था जो समर्थन और संसाधन जुटा सकें।
- राजत्व क्षत्रिय कुल में जन्म लेने पर शायद ही निर्भर करता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

NOTES

Ques

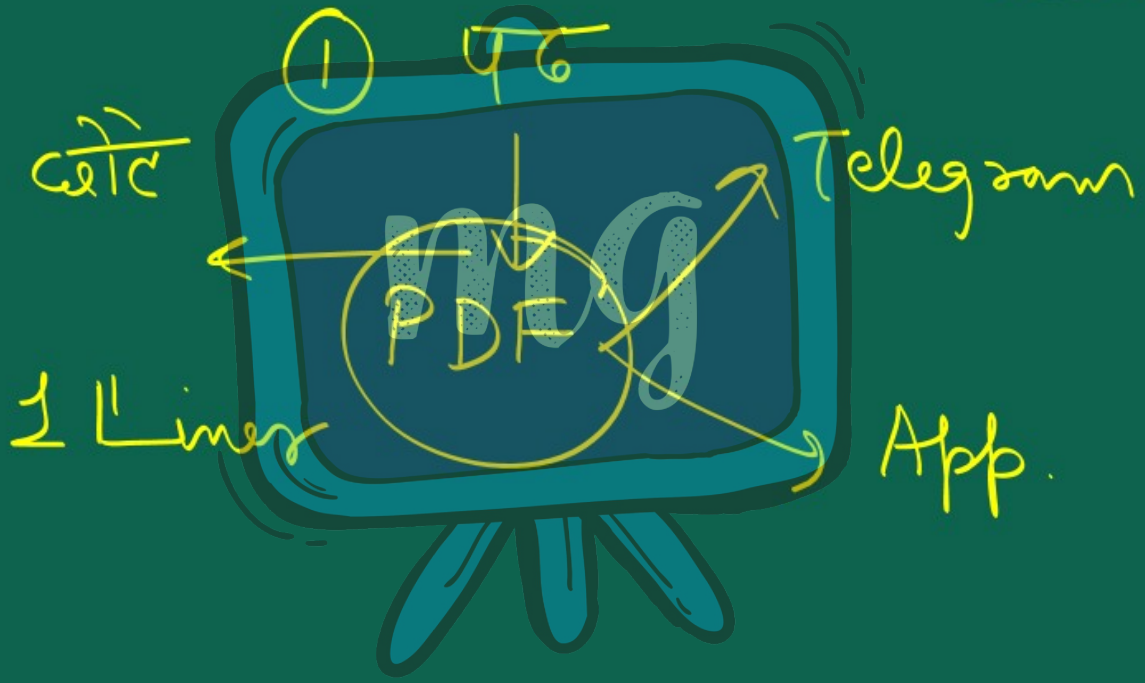

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

सा०

3. द्रोण, हिडिम्बा और मातंग की कथाओं में धर्म के मानदंडों की तुलना कीजिए व उनके अंतर को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : (i) द्रोण की कथा से धर्म के मानदंड –

द्रोण एक ब्राह्मण थे जो कुरू वंश के राजकुमारों को धनुर्विद्या की शिक्षा देते थे। एक बार एकलव्य नामक वनवासी निषाद द्रोण के पास धनुर्विद्या की शिक्षा के लिए आया उस समय द्रोण ने धर्म का पालन करते हुए एकलव्य को अपना शिष्य नहीं बनाया क्योंकि वह निम्न कुल का था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

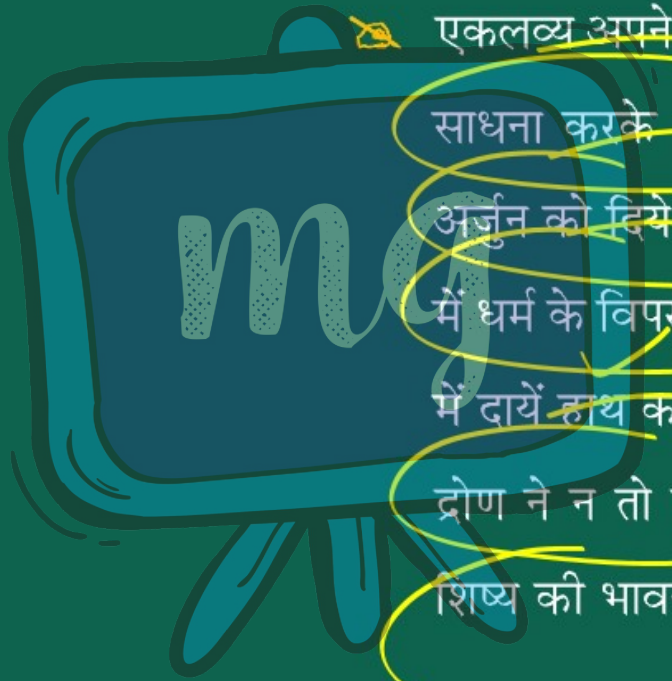

एकलव्य अपने गुरू द्रोण की प्रतिमा को गुरू मानकर साधना करके धनुर्विद्या में पारंगत हो गया। परंतु अर्जुन को दिये गये वचन को निभाने के लिए द्रोण में धर्म के विपरीत जानकर एकलव्य से गुरू दक्षिणा में दायें हाथ का अंगूठा मांग लिया।

द्रोण ने न तो मानव धर्म को निभाया और ना ही शिष्य की भावनाओं का ध्यान रखा।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

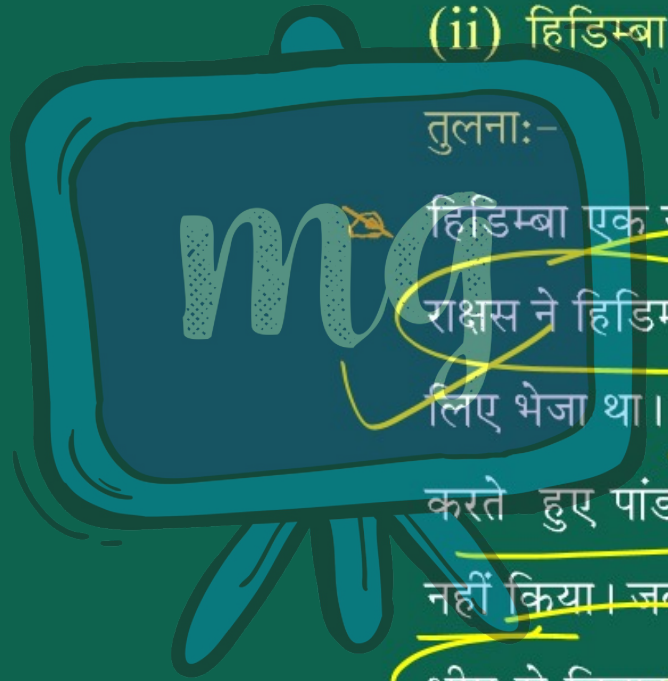

(ii) हिडिम्बा की कथा में धर्म के मानदंडों की तुलना:-

हिडिम्बा एक नरभक्षी राक्षस की बहन थी तथा उस राक्षस ने हिडिम्बा को पांडवों को पकड़ कर लाने के लिए भेजा था। जबकि उसने अपने धर्म का पालन न करते हुए पांडवों को पकड़कर लाने का प्रयास ही नहीं किया। जबकि हिडिम्बा के निवेदन पर कि उसे भीम से विवाह करना है कुंती व युधिष्ठिर ने क्षत्रिय धर्म का पालन करते हुए उदारता का परिचय देकर विवाह की अनुमति दी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

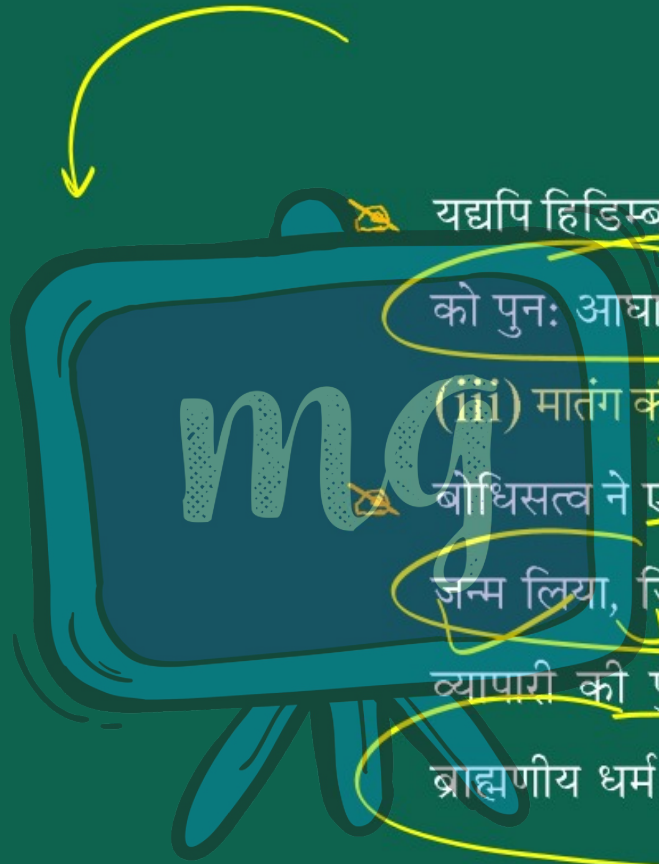

- यद्यपि हिडिम्बा ने विवाह कर राक्षस कुल की मर्यादा को पुनः आघात पहुंचाया।

(iii) मातंग की कथा में धर्म के मानदंडों की तुलना:-

- बोधिसत्व ने एक चाण्डाल पुत्र के रूप में बनारस में जन्म लिया, जिसका नाम मातंग था। मातंग ने एक व्यापारी की पुत्री दिथ्थ मांगलिक से विवाह कर ब्राह्मणीय धर्म के विपरीत कार्य किया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



मातंग के एक पुत्र माण्डव्य कुमार ने जन्म लिया जिसने 3 वेदों पढ़ रखा था तथा वह प्रतिदिन 16000 ब्राह्मणों को भोजन कराता था एक दिन जब मातंग ने अपने पुत्र के घर जाकर भोजन मांगा तो उसने पतित होने के कारण मातंग को भोजन देने से इन्कार कर दिया उसका यह आचरण धर्म के विपरीत था। साथ ही जब मातंग ने उससे कहा कि – अपने जन्म पर गर्व न करो तो उसने मातंग को घर से बाहर निकलवाने का आदेश देकर घृणा एवं क्रूरता दिखाकर धर्म के विपरीत आचरण किया।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

1) द्रोण = ≠

2) हिडिम्बा = राक्षसी धर्म ×

3) मातंग → वर्ण → नजारेया

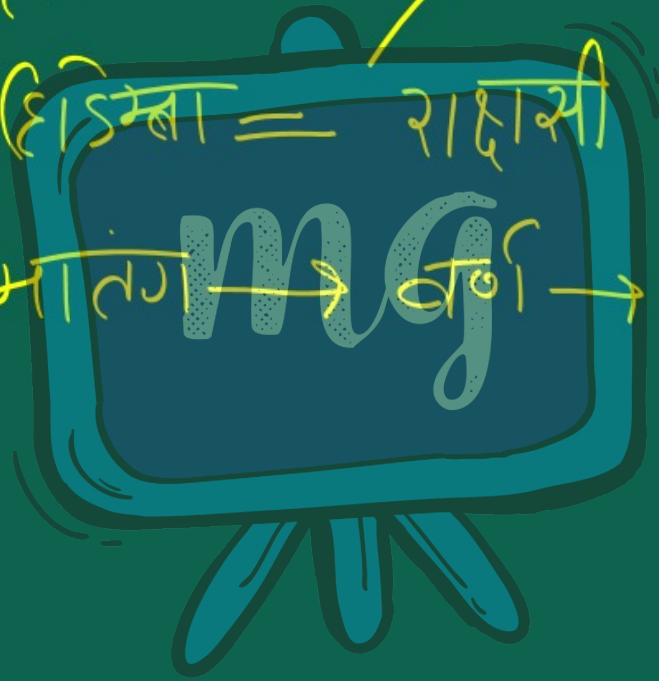

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

